शुक्र के फल

हिमांशु सहगल

प्रथम भाव में:-

जिस मनुष्य के जन्म लग्न में शुक्र हो, और वह शुक्र षड्बल संपन्न हो, शुभ स्थान स्थित हो तो वह मनुष्य सुन्दर शरीर का स्वामी होता है। अब प्रश्न यह उठता है कि शरीर का सौंदर्य क्या है? इसका अर्थ है कि शरीर नैरोग्य है, व्याधिग्रस्त नहीं है तथा जिसके शरीर के सभी अंग-प्रत्यंग, सभी अवयव सुन्दर हों तभी वह सौंदर्यवान् कहलाता है। शास्त्राअनुसार, तनु भावस्थ शुक्र प्रभावान्वित व्यक्ति उत्तम पुरूषों का संग करता है।

जीवनाथ के अनुसार जिस मनुष्य के जन्म समय में शुक्र लग्न में हो उसका रूप सुन्दर होता है। सत्पुरूषों का संग और प्रबल शत्रुओं का सहसा नाश होता है। सुन्दरी, मृगनयनी स्त्रियों से नित्य रतिक्रीड़ा होती है। यह उत्तम कर्म करने वाला होता है। इसका सदा कल्याण होता है।

कल्याण वर्मा के अनुसार इसका शरीर, मुख और आँखें सुन्दर होती हैं। यह सुखी, दीर्घायु, भीरू, युवतियों के लिए आकर्षक होता है।

वराहमिहिर के अनुसार यह कामक्रीड़ा में निपुण और सुखी होता है।

पराशर के अनुसार तुला, मेष लग्न में हो शुक्र तो बलवान होता है। पराशर का यह भी कहना है कि केन्द्र स्थान में शुक्र होने से व्यक्ति धनवान और राजप्रिय होता है। इसका पुत्र दीर्घायु होता है।

वैद्यनाथ के अनुसार यह जातक कामी, सुन्दर, अच्छे स्त्री-पुत्रों से युक्त तथा विद्वान होता है यदि उनके शुक्र लग्न में हो।

वशिष्ठ के अनुसार इसका शरीर कान्तिमान् अर्थात् तेजस्वी होता है। इसके शत्रु नष्ट होते हैं। यह शुक्र अन्य ग्रहों के 300 दोषों को अर्थात् अशुभ

योगों को दूर करता है।

गर्ग के अनुसार यह जातक बहुत बोलने वाला होता है। शिल्पकला में निपुण, सुशील, नम्र, गायन में चतुर, काव्यशास्त्र परिशीलन में आनन्द लेने वाला और धर्मात्मा होता है। ऐसे व्यक्ति का रंग गोरा होता है तथा इसका स्वभाव वात-पित्त प्रधान होता है अर्थात् इसे वात और पित्त के रोग होते हैं कमर, पीठ, उदर व गुह्यस्थान में कोई व्रण या तिल होता है। इसे कुत्ते एवं सींग वाले पशुओं से कष्ट एवं भय होता है।

जयदेव के अनुसार यह सुन्दर, आंखों को प्यारा, सुखी तथा दीर्घायु होता है। सदैव शुभ कर्म करता है, शुभ वचन बोलता है। गुणी, धनी और स्त्री सुखवान् होता है।

जातक मुक्तावली के अनुसार यदि शुक्र लग्न में हो तो प्राणी के बारहवें वर्ष मस्तक पर कोई चिह्न प्रकट होता है। शुक्र लग्न में हो तो चक्षुः नाशक होता है।

वृहदयवनजातक के अनुसार जातक अनेक कलाओं में कुशल, शुभ वचन बोलने वाला, उत्तम-उत्तम स्त्रियों का उपभोग लेने वाला, राजमान्य तथा धनी होता है।

मानसागर के अनुसार जन्म समय में शुक्र लग्न में हो तो मनुष्य सब कामों में चतुर, दूसरों को उपदेश देने वाला, अनेक चित्रकलायुक्त, घर में रहने वाला, कौतुकी, भाग्य भरोसे रहने वाला होता है।

हरिवंश के अनुसार यह अतीव सुन्दर, नीरोग, समृद्धिमान् भूषणों से सुशोभित, स्त्री सुखयुक्त राजा जैसा प्रतापी, कुलभूषण, पण्डित और पराक्रमी होता है।

भृगुसूत्र के अनुसार यह गणितज्ञ, दीर्घायु, स्त्रीप्रिय, वस्त्र, अलंकार, रूप, यौवन, स्त्री और गुणों का प्यारा होता है। धनी और विद्वान होता है। यदि यह शुभ ग्रह योग में होता है तो व्यक्ति का शरीर सोने जैसा चमकीला होता है और इसे नाना प्रकार के भूषण प्राप्त होते हैं। यदि पाप ग्रह से युक्त वा दृष्ट हो वा नीच राशि में वा अस्तंगत हो तो व्यक्ति चोर-ठग और वातरोगादि से पीड़ित होता है। लग्नेश राहु के साथ हो तो वृहद्वीज होता है। शुभ ग्रह के साथ हो तो गंजात वैभव होता है। सब सुख मिलते हैं। स्वग्रह में हो वा अष्टम

स्थान का स्वामी वा द्वादश स्थान का स्वामी वा निर्बल हो तो द्विभार्या योग होता है। शुक्र अपने स्थान में वृषभ-तुला राशि में हो तो बड़ा राजयोग होता है।

द्वितीय भाव में:-

जिस मनुष्य के जन्मकाल में भृगु धन भाव में होता है वह मुख से मधुर वचन बोलता है। उसकी बुद्धि कुशाग्र और धार्मिक भावपूर्ण होती है। उसका मुख सुन्दर होता है। यह उत्तम, विविध रंगों के स्वच्छ वस्त्र पहनता है। यह घर में परम्परा से चली हुई देवताओं की पूजा चालू रखता है। यह सर्वविध सौंदर्य संपन्न स्त्रियों के उपभोग लेने का इच्छुक रहता है। इस तरह इसके कुटुम्ब में क्या है जो सुन्दर नहीं होता अर्थात् सभी कुछ उत्तम होता है।

जीवनाथ के अनुसार, जिस मनुष्य के जन्म समय में शुक्र धन भाव में हो उसका मुख और शरीर सुन्दर होता है। बुद्धि बहुत तीव्र होती है। सदा चंचल नेत्रवाली स्त्रियों को प्रसन्न करने वाली मधुरवाणी होती है और वस्त्र तथा धनादि से भण्डार परिपूर्ण रहता है।

वैद्यनाथ के अनुसार, जिसके धन भाव में शुक्र हो वह विद्यावान्, कामुक, कलाकार, विलासी और धनी होता है।

पराशर के अनुसार, जातक को विविध रीतियों में से धन का संचय होता है।

गर्ग के अनुसार, ऐसा जातक विद्या द्वारा व स्त्री से धन प्राप्त करता है। धन भाव में शुक्र हो व शुक्र की दृष्टि हो तो यह धनवान् और बहुश्रुत होता है। यह मधुर बोलता है, यह सभा में विजयी होता है।

मन्त्रेश्वर के अनुसार, यह जातक कवि और धनी होता है।

काशीनाथ के अनुसार, यह धनी, विद्वान, बन्धुमान्य, नृपपूज्य, यशस्वी, गुरुभक्त और कृतज्ञ होता है।

कल्याणवर्मा के अनुसार, ऐसे जातक को खाने-पीने को खूब मिलता है। यह धनी, विलासी और अच्छा बोलने वाला होता है।

मानसागर के अनुसार, ऐसा जातक पराये धन से अपने को धनी मानता है। इसका चित्त स्त्रियों की ओर रहता है। यह चाँदी और सीसा के व्यापार से

धनी, गुणी, दुर्बल शरीर, प्रियवक्ता और बहुपालक होता है।

बृहदयवनजातक के अनुसार, इसकी रूचि अच्छे खाने पीने की ओर होती है। इसे वस्त्र-भूषण, वाहन, धन अच्छे दर्जे के मिलते हैं। यह अनेक विद्याओं को जानने वाला होता है।

भृगुसूत्र के अनुसार, यह धर्मवान्, धन, नम्रता, सौंदर्य, दया, परोपकार इन गुणों वाला होता है। इसका कुटुम्ब बड़ा होता है। भोजन अच्छा मिलता है। आँखें सुन्दर होती हैं। बत्तीसवें वर्ष उत्तम स्त्री तथा भूमि का लाभ होता है। धनेश दुर्बल हो वा अशुभ स्थान में (6,8,12$^{वें}$ स्थान में) हो तो आंखों के रोग होते हैं। यह शुक्र चन्द्र के साथ हो तो राव्यंधता होती है, कुटुम्ब नष्ट होता है। आंखों के रोग होते हैं। धन की हानि होती है।

तृतीय भाव में:-

जिस मनुष्य के जन्म लग्न से तीसरे स्थान में शुक्र हो वह स्त्रियों से प्रीति नहीं करता है अर्थात् स्त्रियों में आसक्त नहीं होता है– साधारण प्रेम रहता है। इसका संकेत पति-पत्नी में वैमनस्य भी हो सकता है विवाहिता पत्नी की ओर उदासीनता का व्यवहार, और परकीया स्त्रियों की ओर विशेष आकर्षण- यह भी अन्तर्गत भाव हो सकता है। यदि 'स्त्रीजन' शब्द का अर्थ स्त्रीमात्र लिया जाए और स्वकीया तथा परकीया स्त्री की ओर संकेत न समझा जाए तो मोक्ष मार्ग की ओर भी संकेत हो सकता है। मोक्ष मार्ग में अग्रसर होने में बड़ी भारी अर्गला, बड़ी भारी रूकावट स्त्रीजन है। मोक्ष मार्ग में कांटे बिखेरने वाली स्त्री है। स्त्री रूपी गर्भपात से बचकर चलने वाला कोई एक संत ही हो सकता है। परंतु तृतीय भावस्थित शुक्र अपने प्रभाव से जातक को मायारूपिणी नारी में आसक्त होने से दूर रखने का यत्न करता है– यह अन्तर्गत मर्म है। इसके बंधु-बांधवों का नाश नहीं होता है, अर्थात् इसके बंधु-बांधव जीवित रहते हैं और इसे परिजनों से सुख प्राप्त होता है। बांधवहीन प्राणी अकेला संसार में सुखी नहीं हो सकता है। इसका भाव यह है कि तृतीय भावस्थ शुक्र परिजनसुखदाता है। तृतीयभावगत शुक्र पुत्रदाता है किंतु इससे जातक का मन संतुष्ट नहीं होता है। पुत्र प्राप्ति की तृष्णा जातक को असंतुष्ट रखती है। तृतीय भावगत शुक्र के प्रभाव से जातक सेनापति तो होता है, किंतु दान देने के समय

तथा संग्राम में शत्रु पर आघात करने के समय यह कातर होता है अर्थात् यह जातक न तो दानशूर होता है और ना ही संग्राम शूर होता है। पीछे हट जाने की प्रवृत्ति से अपवाद का विषय होता है, दान लेने वाले और युद्ध में लड़ाकू शत्रु लोग इसकी खिल्ली उड़ाते हैं।

जीवनाथ के अनुसार, जिस मनुष्य के जन्म समय में शुक्र तृतीय भाव में हो उसे कमलमुखी सुंदर स्त्रियों में निरंतर अत्यंत प्रेम होता है। पूर्ण पुत्र सुख होने पर भी तृप्ति नहीं होती है। पूर्ण धन दान में कृपणता होती है। वह रणस्थल में न सेनाधीश होता है और न शूर ही होता है।

वराहमिहिर के अनुसार, धन के सदुपयोग में जातक कृपण होता है, दानशूर नहीं होता है।

पराशर के अनुसार, ऐसे जातक के शत्रु बढ़ते हैं, धन कम होता जाता है।

वशिष्ठ के अनुसार, ऐसे जातक का वेश साधारण होता है, यह सुखी होता है।

गर्ग के अनुसार, इसकी बहिनें बहुत होती हैं। भाई तीन होते हैं। साथ में क्रूर ग्रह होने से उनकी मृत्यु होती है। इसकी बहिन गौरवर्णा होती है। इसका बृहद परिवार होता है।

कल्याणवर्मा के अनुसार, ऐसा जातक सुखी, धनी, कृपण तथा स्त्री के वशीभूत होता है और उत्साह कम होता है।

वैद्यनाथ के अनुसार, यह कड़वा बोलता है और क्रोध से बोलता है। पापी और स्त्री वशवर्ती होता है। तीसरे और छठे में शुक्र हो तो रोगकारक और भयकारी होता है, किंतु सूर्य के आगे हो तो इन्हीं स्थानों शुभ फल देता है।

मानसागर के अनुसार, इसे मोह बहुत होता है। इसकी बहिनें होती हैं। इसे आंखों के रोग होते हैं। यह धनी तथा मधुरभाषी होता है। यह अच्छे कपड़े पहनता है।

काशीनाथ के अनुसार, यह धन-धान्य तथा पुत्रों से युक्त, नीरोग, राजपूजित तथा प्रतापी होता है।

भृगुसूत्र के अनुसार, यह बहुत लोभी, नम्र, संपत्ति का उपभोग करने वाला होता है। भाइयों की वृद्धि होती है। छोटे भाई नहीं होते। मन के संकल्प सफल

होते हैं। तृतीयेश बलवान उच्च का, स्वगृह में हो तो भाइयों की वृद्धि होती है। अशुभ स्थान में वा पाप ग्रह से युक्त हो तो भाइयों की हानि होती है।

चतुर्थ भाव में:-

जिस मनुष्य के जन्म लग्न से चौथे स्थान में शुक्र हो वह लोगों द्वारा अधिक सम्मान पाता है। उसका चित्त पूजा तथा उत्सव के कार्यों में बहुत लगता है। वह बड़े-बड़े महत्त्व देने वाले कार्य करता है, जिस कारण लोग उसका अधिक से अधिक आदर-मान करते हैं। स्त्री और पुरूष, अपने या पराये कोई भी हों – वे इससे प्रसन्न या अप्रसन्न अंत:करण से जैसे भी रहें – समक्ष में इसकी पूजा व आदर ही करते हैं। यह प्राणी अपनी चाल से मस्ताना चला रहता है। किसी की प्रसन्नता से इसका चित्त हर्षोल्लास से प्रफुल्लित नहीं होता है और किसी की रुष्टता या अप्रसन्नता से इसका चित्त विकृत या खिन्न नहीं होता है। वह अपने अधीन नौकर-चाकर आदि लोगों की भेंट से ही पूर्ण मनोरथ होता है। यह मनुष्य जन्म से ही माता का पालन-पोषण करता है। इसे मातृ सुख प्राप्त होता है और यह मातृभक्त तथा मातृसेवक होता है।

जीवनाथ के अनुसार, जिस मनुष्य के जन्म समय में शुक्र चतुर्थ भाव में हो वह महान् पूजनीय होता है। शुक्र चतुर्थ भाव में हो वह महान् पूजनीय होता है। दूसरों के रूष्ट या तुष्ट रहने पर भी वह सदा एक समान ही रहता है। जन्म समय से ही उसे मातृ सुख अधिक होता है और इसे गाय, हाथी और उत्तम घोड़ों का अधिक सुख होता है। ऐसा व्यक्ति विशेषत: एक आदरणीय व्यक्ति होता है। लोग इसका आदर मान करके अपने को धन्य मानते हैं। यह पुरूष योगिजन वृत्ति का होता है। इसे मातृ सुख विशेषत: प्राप्त होता है। यह प्राणी सर्वविध ऐश्वर्य का उपभोग करता है।

वैद्यनाथ के अनुसार, चतुर्थ (बंधु) भाव में शुक्र के होने से जातक स्त्री के वशवर्ती होता है। इसे सुख, यश-धन-बुद्धि तथा विद्या प्राप्त होते हैं और यह बहुत बोलने वाला होता है।

जयदेव के अनुसार, यह भूमिपति होता है। इसके मित्र अच्छे होते हैं। इसे घर का और वाहन आदि का सुख मिलता है। यह मानी, सुखी, आनंदी तथा

धार्मिक वृत्ति का होता है।

काशीनाथ के अनुसार, शुक्र के सुख भाव में होने से जातक सुखी, विद्वान, धनी, ग्राम का मुखिया, विवेक संपन्न तथा कीर्तिमान् होता है। यह बहुत स्त्रियों से युक्त होता है।

गौरीजातक के अनुसार, लग्न से चतुर्थ शुक्र के होने से जातक जन्म से ही निर्धन, कफ रोग तथा नेत्र रोग से पीड़ित होता है।

बृहद्यवनजातक के अनुसार, इसे मित्र सुख, क्षेत्र (भूमि) सुख, ग्राम सुख, उत्तम वाहनों का सुख प्राप्त होता है।) यह देवताओं का भक्त तथा पूजक होता है। सदैव आनन्द में रहने वाला होता है।

हरिवंश के अनुसार, चतुर्थ भावगत शुक्र हो तो यह अपने कुटुम्ब, शहर तथा लोगों में प्रमुख, सुखी, देवभक्त, विद्वान अच्छे वाहनों से संपन्न और स्त्री मित्रों से युक्त होता है।

वराहमिहिर के अनुसार, चतुर्थ शुक्र से जातक सुखी होता है।

भृगुसूत्र के अनुसार, चतुर्थ भाव में शुक्र होने से जातक बुद्धिमान, सुन्दर, क्षमाशील तथा सुखी होता है। इसे माता और भाइयों का सुख अच्छा मिलता है। तीसरे वर्ष घोड़े और वाहन मिलते हैं, गोधन-दूध-दही खूब होते हैं। चतुर्थेश बलवान् हो तो घोड़े-पालकी सोने के आसन आदि वैभव प्राप्त होता है।

यह पाप ग्रह युक्त हो तो अथवा पाप ग्रह की राशि में, शत्रु राशि में या नीच में दुर्बल हो तो खेती, वाहन आदि नहीं होते। माता को कष्ट होता है। एक से अधिक स्त्रियों का उपभोग करता है।

पंचम भाव में:-

जिस मनुष्य के जन्म लग्न से पाँचवें स्थान में शुक्र न हो इसे पुत्र के होते हुए भी सुपुत्र होने का फल प्राप्त नहीं होता है। जिससे द्रव्य प्राप्ति नहीं होती है, उस उद्योग का भी कोई लाभ नहीं है। पाँचवां शुक्र हो तो पुत्र सुख, द्रव्य प्राप्ति, शुभ फल और उत्तम कवित्व शक्ति उसे प्राप्त होती है। संक्षेप में, उसे अच्छे पुत्र होते हैं। विशेष प्रयास न करने पर भी धन मिलता है मंत्र और मिष्ठान प्राप्त होते हैं। कविता करने की शक्ति अच्छी होती है। यह शुभ

प्रभाव पंचम भावगत शुक्र का है।

जीवनाथ दैवेज्ञ के अनुसार, जिस मनुष्य के जन्म समय में शुक्र पंचम भाव में हो उसे शीघ्र ही पुत्र प्राप्ति तथा सहसा प्रचुर धन का लाभ भी होता है मंत्र के जप से सर्व प्रकार की सिद्धि होती है। लोगों के मध्य में कविता करने की शक्ति होती है उसे सदा मिष्ठान भोजन का सुख होता है।

कल्याणवर्मा के अनुसार, पंचम भाव में यदि शुक्र हो तो जातक सुखी, पुत्रवान्, मित्रों से युक्त, विलासप्रिय, अतीव धन से संपन्न, सर्व प्रकार से वस्तुओं से परिपूर्ण, राजमंत्री या न्यायाधीश होता है।

वराहमिहिर के अनुसार, यदि पंचम भावगत शुक्र हो तो जातक सुखी होता है।

वशिष्ठ के अनुसार, ऐसे जातक के बहुत पुत्र होते हैं अर्थात् कन्याओं की अपेक्षा पुत्र संख्या में अधिक होते हैं। पंचम शुक्र पुत्र और कन्याओं दोनों प्रकार की सन्तति देता है।

वैद्यनाथ के अनुसार, यदि शुक्र पंचम भाव में हो तो जातक सुपुत्रवान्, धनी-सौंदर्य संपन्न, सेनापति और घोड़ों का पति होता है।

काशीनाथ के अनुसार, शुक्र पाँचवें स्थान में हो तो जातक समृद्धिवान्, सुन्दर, सदैव उन्नत, सैकड़ों पुत्र और पुत्रियों से युक्त होता है।

ढुण्ढिराज के अनुसार, यदि शुक्र पंचम भाव में बैठा हो तो जातक संपूर्ण काव्य कला को जानने वाला, पुत्र, वाहन तथा धान्य से युक्त और राजा से आदर पाने वाला होता है।

वृहद्यवनजातक के अनुसार, यदि जातक की जन्मकुण्डली में शुक्र पुत्र भाव में (पंचम में) हो तो जातक कविता और कलाओं से सर्वथा कुशल और निपुण होता है। धन-धान्य पुत्र तथा वाहनों से संपन्न होता है। ऐसा व्यक्ति राजा द्वारा सम्मानित होता है।

मानसागर के अनुसार, पंचम भाव में शुक्र हो तो जातक बहुत पुत्रवाला, जामाता से पूजित, बहुत धनवाला-गुणी तथा श्रेष्ठ नेता कहलाता है। कामक्रीड़ा में निपुण, स्त्रियाँ इसे प्यार करती हैं या वह विलासिनी स्त्री का पति होता है।

जयदेव के अनुसार, पंचम भाव में शुक्र के होने से जातक अनेक शास्त्रों

का ज्ञाता होता है। जातक बहुत धनवान् पुत्र सौव्य से युक्त, सुखी, मानी तथा दानी होता है।

गौरीजातक के अनुसार, शुक्र के पंचम भावगत होने से जातक बहुत कन्याओं का पिता होता है। यह धनी भी होता है किंतु कीर्तिरहित होता है।

हरिवंश के अनुसार, यदि जातक के पंचम भाव में शुक्र हो तो यह विद्वान, कवि, राजनीतिज्ञ, उत्तम तथा विश्वसनीय मित्र, धार्मिक, कर्मठ, सुंदर, भाग्यवान्, उपभोग और अलंकार प्राप्त करने वाला होता है। इसे बहुत पुत्रों का सौभाग्य प्राप्त होता है।

भृगुसूत्र के अनुसार, पंचम भाव का शुक्र जातक के कवि, मंत्री तथा सेनापति बना देता है। यह जातक मातृ सेवक तथा दादी को देखने वाला होता है। यह प्रौढ़ बुद्धि होने से काव्यकर्तृत्वशक्ति संपन्न होता है। इसे तरूणा स्त्री तथा पुत्रों का सौभाग्य प्राप्त होता है। यह राजा द्वारा सम्मानित होता है। इसकी स्त्री सदैव प्रसन्न रहती है। यह व्यवहार चतुर और न्यायप्रिय तथा न्यायपरायण होता है। यदि जातक पंचम शुक्र पापी ग्रह के साथ में हो या पाप ग्रह के क्षेत्र राशि में हो, शत्रु क्षेत्री हो या नीच राशिगत हो तो जातक बुद्धिजड़ अर्थात् मूर्ख होता है। इसके पुत्रों का मरण होता है। यदि यह शुक्र शुभ संबंध में हो तो जातक मतिमान् तथा नीतिमान् होता है। यह जातक वाहनों से समृद्ध होता है अर्थात् इसे गाड़ी, घोड़ा, हाथी, स्कूटर मोटर आदि वाहनों का सुख रहता है।

छठे भाव में:-

जिस जातक के जन्म समय में शुक्र षष्ठ भाव अर्थात् रिपु भाव में होता है, उसके शत्रु कभी नष्ट नहीं होते, मानो उन्होंने देवताओं की भांति अमृतपान कर रखा हो। अर्थात् छठे भाव का शुक्र प्रबल शत्रु वर्ग को जन्म देता है यह शत्रु वर्ग सदैव जातक को दु:ख का दाता तथा मानसिक शांति के भंग का कारण बना रहता है। जातक का खर्च भी बढ़-चढ़कर होता रहता है, धन व्यय चाहे सन्मार्ग में हो चाहे कुमार्ग में, आय से भारी मात्रा में होता है जिसमें दारिद्य तथा ऋणग्रस्तता जातक की अशान्ति तथा मनोव्यग्रता बनी रहती है। अपने से जाति में, गुणों में और कार्यकरण में भारी सामर्थ्य रखने वाले प्रबल शत्रुओं से सदैव घिरे हुए रहना और आय से अधिक खर्च का होना, यह छठे भाव के शुक्र का फल है। यह जातक के जीवन को कष्टमय बना देता है। कार्य

को फलोन्मुख बनाने के लिए भारी उद्योग और यत्न करने पर भी जातक की कार्यसिद्धि नहीं होती बल्कि काम बिगड़ ही जाता है। कुमंत्र के जप से दु:ख उठाना पड़ता है। जातक को पूजार्ह गुरूजनों से या पूज्य माता-पिता आदि से सुख प्राप्ति नहीं होती है बल्कि जातक का रूख या रवैया गुरूजनों के विरोध में रहता है।

जीवनाथ के अनुसार, जिस मनुष्य के जन्म समय में शुक्र षष्ठ भाव में हो तो उसके अमृत से सिंचित शत्रु वर्ग होते हैं अर्थात् उसके शत्रुओं का नाश कभी नहीं होता है। निरंतर धन व्यय की वृद्धि होती है तथा यत्न से संपादित कार्य भी शीघ्र ही नष्ट हो जाता है और कूमंत्र के जप से कुल का नाश होता है।

कल्याण वर्मा के अनुसार, यदि षष्ठ भाव में शुक्र हो तो जातक स्त्री के प्रति द्वेष बुद्धि रखता है। इसके शत्रु बहुत होते हैं। यह धनहीन होता है। जातक विह्वल और नीच प्रकृति का पुरूष होता है।

वराहमिहिर के अनुसार, यदि शुक्र छठे भाव में हो तो जातक शत्रुहीन होता है अर्थात् इसके शत्रु नहीं होते।

वशिष्ठ के अनुसार, छठे भाव में शुक्र के होने से जातक बुद्धिहीन होता है। इसे प्रचुर मात्रा में रोग होते हैं। शत्रुओं से भय होता है।

पराशर के अनुसार, छठा शुक्र हो तो जातक शत्रुओं से पराजित होता है। इसे शारीरिक व्याधियां होती हैं।

वैद्यनाथ के अनुसार, यदि छठे भाव में शुक्र होता है तो जातक को शोक तथा निन्दा के अवसर बहुत आते हैं।

मंत्रेश्वर के अनुसार, शुक्र यदि छठे भाव में हो तो जातक के कोई शत्रु नहीं होते। वह धनहीन होता है। उसका अवैध संबंध अनेक युवतियों से होता है। अतएव यह रूग्ण रहता है और दु:ख भोगता है।

जयदेव के अनुसार यदि शुक्र रिपु भाव (छठे स्थान) में हो तो वैभव सुख नहीं मिलता है। जातक मलिन और रोगी रहता है।

काशीनाथ के अनुसार, यदि जन्मकुण्डली में जातक के छठे भाव में शुक्र हो तो यह दंभी, जड़ बुद्धि, धनहीन-डरपोक-बुरी संगति में रहने वाला, झगड़ालू तथा पिता से द्वेष करने वाला होता है। हर तरह से इसे नुकसान सहना

पड़ता है।

मानसागर के अनुसार, यदि जातक की जन्मकुण्डली में शत्रु भाव अर्थात् छठे भाव में शुक्र हो तो जातक का जन्म श्रेष्ठ कुल में होता है। वह सुशिक्षित और विवेकशील विद्वान होता है। यदि शुक्र अस्तगत हो तो शत्रु बलनाशक तथा शत्रु विजेता होता है। यदि अपनी उच्चराशि मीन में शुक्र हो अथवा वह शुक्र स्वगृही अर्थात् वृष या तुला राशि में हो तो जातक सदैव प्रसन्न मुद्रा में रहने वाला होता है।

भृगुसूत्र के अनुसार, लग्न से छठे स्थान में शुक्र हो तो जातक जाति व संतानवाला, शत्रुओं का नाश करने वाला, पुत्र और पौत्र वाला होता है। यह जातक अपने धन का खर्च अनुचित प्रकार से करता है अर्थात् जहाँ धन का व्यय होना चाहिए वहाँ व्यय नहीं करता है। यह कपटी और रोगी होता है। इसे श्रेष्ठ पुत्र होता है। यदि षष्ठेश बलवान हो या बलवान ग्रहों से युक्त हो तो शत्रु और अपनी जाति के लोगों की वृद्धि होती है। यदि यह शुक्र शत्रु तथा पापग्रह से युक्त हो या अपनी नीच राशि (कन्या) में हो अथवा षष्ठेश के साथ चन्द्रमा बैठा हो तो शत्रु और जाति का नाश होता है।

सप्तम भाव में:-

यदि जातक के सप्तम भाव में शुक्र होता है तो उसे स्त्री से सुख प्राप्त होता है। सप्तम भाव (कलत्र) का शुक्र स्त्री सुख कारक माना जाता है। किंतु कलत्र से अर्थात् कटिप्रदेश से सुख नहीं मिलता है अर्थात् जातक की कमर में पीड़ा होती रहती है। यहाँ दूसरा कलत्र शब्द कमर (श्रेणि) के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। जातक की भार्या के गर्भ से रत्नवत्, शुद्ध-सच्चरित्र तथा भाग्यवान् पुत्र पैदा होते हैं। जातक विलासी, परदेस में रहने वाला-थोड़ा प्रयास करने वाला अर्थात् आरामतलब होता है। कौन ऐसे हैं जो इसके सुन्दररूप पर मोहित न हों अर्थात् यह जातक बहुत आकर्षक होता है अथवा यह जातक इतना व्यवहार चतुर होता है कि इसके चातुर्य से सभी मोहित होते हैं।

जीवनाथ के अनुसार, जिस मनुष्य के जन्म समय में शुक्र कलत्र अर्थात् सप्तमभाव में हो वह स्त्री से पूर्णसुख प्राप्त करता है। किन्तु वातजन्य कष्ट कमर में भारी कष्ट का कारण होता है। इसे सन्तान सुख प्रचुर मात्रा में प्राप्त होता है। सुन्दरी स्त्रियों के उपभोग का सुख अधिक से अधिक मिलता है। यह

एक श्रेष्ठ कलाकार होता है, और इसकी कला से सब रसिक श्रेष्ठ लोग मोहित होते हैं।

आचार्य वराहमिहिर के अनुसार, यह शुक्र जातक के सप्तम भाव में हो तो यह कलहवल्लभ और सुरताभिलाषी होता है।

कल्याणवर्मा के अनुसार, सप्तम भाव स्थित शुक्र ऐसे जातक को जन्म देता है जो अतीव सुन्दर होता है। इसे स्त्री सुख प्राप्त होता है। यह वैभवपूर्ण होता है यह किसी से लड़ाई-झगड़ा नहीं करता है, यह भाग्यवान् होता है।

वैद्यनाथ के अनुसार, जिस जातक के सप्तम भाव में शुक्र हो उसे वेश्याओं से प्रेम होता है। स्त्रियाँ भी इससे प्यार करती हैं। यह सुन्दर स्वरूप होता है। इसके शरीर में कुछ व्यंग्य होता है। मानसागर के अनुसार, सप्तम भाव में शुक्र हो तो जातक बहुत पुत्र और धन से युक्त, श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न स्त्री का पति, सुंदर, सदा प्रसन्न और सुखों से युक्त रहता है।

गर्ग के अनुसार, शुक्र यदि सप्तम भाव (कलत्रस्थान) में हो तो जातक पुत्रों से तथा धन से युक्त होता है। यह सुंदर होता है। यह प्रसन्नमनाः तथा सुखी होता है। इसकी पत्नी कुलीन होती है। यह शुक्र यदि शुभ राशि में, शुभ ग्रह के साथ या शुभ ग्रह की दृष्टि में हो तो जातक की पत्नी तरूणा होती है और बहुत सुन्दर, गोरे वर्ण की तथा प्रफुल्लित कमल जैसी आँखों वाली होती है। यह शुक्र मंगल के साथ दृष्टि में, नवांश में या मंगल की राशियों (मेष-वृश्चिक) में हो तो परस्त्रीगमन की इच्छा रहती है।

ढुण्ढिराज के अनुसार, जिसके जन्मकाल में सप्तमभाव में शुक्र स्थित होता है वह जातक अनेक कलाओं में चतुर, जलक्रीड़ा करने वाला और वेश्याओं से प्रेम रखने वाला होता है।

पराशर होरा के अनुसार, यदि शुक्र कलत्र भाव में हो तो जातक अत्यन्त कामुक होता है। पाप ग्रह युक्त होकर यदि किसी और भाव में हो तो स्त्री की मृत्यु होती है।

काशीनाथ के अनुसार, जिसके सप्तम में शुक्र हो तो वह जातक धनी, सुन्दरी तथा उत्तम स्त्री से युक्त नीरोग, सुख संपन्न तथा बहुत भाग्यशाली होता है।

वशिष्ठ के अनुसार, इसकी स्त्री बहुत आकर्षक होती है, जातक को

शोकमग्न होने के अवसर बार-बार आते हैं।

वृहद्यवनजातक के अनुसार, सप्तम भाव में शुक्र के होने से जातक अनेकविध कलाओं में निपुण और चतुर, जलक्रीड़ा करने वाला, कामक्रीड़ा में चतुर तथा किसी एक नटी पर प्रेम करने वाला होता है।

भृगुसूत्र के अनुसार, सप्तम भाव में शुक्र हो तो जातक बहुत कामुक, परस्त्रियों में आसक्त, धनी, वाहनों से युक्त, सकल कार्य निपुण, स्त्रियों से द्वेष करने वाला होता है। यह अपनी विवाहिता स्त्री से वैमनस्य रखता है। यह अर्थ भी संगत है – तभी तो परकीया में आसक्त रहेगा। इसे सलाह देने वाले आरत, स्त्री आदि अच्छे होते हैं। यह शुक्र पाप ग्रह के साथ शत्रु ग्रह की राशि में या नीच राशि में हो तो पहली पत्नी की मृत्यु होती है और दूसरा विवाह होता है। इस शुक्र के साथ बहुत पाप ग्रह हों तो अनेक विवाह होते हैं। पुत्र नहीं होते हैं। यह शुक्र शुभ ग्रह के साथ या उच्च राशि में या वृष अथवा तुला राशि में हो तो जातक धनवान् होता है। स्त्री के संबंध से इसे बहुत उन्नति प्राप्त होती है। स्त्री के विषय में इसे भारी चिन्ता रहती है। पाठान्तर यह स्त्रियों के समूह में रहने वाला होता है।

अष्टम भाव में:-

जिस मनुष्य के जन्म लग्न से आठवें स्थान में शुक्र हो उसे गाय, भैंस, बकरी, घोड़ा आदि से सुख होता है। वह व्यर्थ का वाद करता है अर्थात् जातक का बोलना नीचों जैसा होता है। जातक बहुत समय तक सुख से जीवन व्यतीत करता है अर्थात् वह दीर्घायु होता है। इसे विजय और धन लाभ कष्ट से प्राप्त होते हैं। बार-बार देते रहने पर इसका ऋण बढ़ता ही जाता है अर्थात् सूद बढ़ता जाता है।

जीवनाथ के अनुसार, जिस जातक के जन्म समय में शुक्र अष्टम भाव में हो वह कठोर वचन बोलने वाला होता है। वह चिरंजीवी अर्थात् दीर्घायु होता है इसे चौपायों से अर्थात् हाथी, घोड़ा, गाय और नौकरों से सुख होता है। धन का लाभ कष्ट से होता है। कभी धन की वृद्धि और कभी ऋण की वृद्धि होती है। यह शत्रुओं पर कष्ट से विजय प्राप्त करता है।

आचार्य वराहमिहिर के अनुसार, अष्टम शुक्र हो तो जातक नीच अर्थात् स्वकुलानुचित कर्मकृत होता है।

वैद्यनाथ के अनुसार, शुक्र अष्टम स्थान में हो तो जातक दीर्घायु, सर्वसौख्य युक्त, अती बली और धनिक होता है।

मंत्रेश्वर के अनुसार, अष्टम में शुक्र हो तो जातक धनी, दीर्घायु और भूमिपति होता है।

काशीनाथ के अनुसार, आठवें स्थान में यदि शुक्र हो तो जातक रोगी झगड़ालू, व्यर्थ घूमनेवाला, निकम्मा तथा मनुष्यों का प्यारा होता है।

कल्याणवर्मा के अनुसार, शुक्र यदि अष्टम भाव में हो तो जातक दीर्घायु, बहुत सुखी, धनवान्, राजतुल्य तथा सर्वथा संतुष्ट होता है।

मानसागर के अनुसार, अष्टम भाव में शुक्र हो तो जातक धर्मात्मा, राजसेवक, मांस भोजन प्रिय, विशाल नेत्र वाला होता है। पचहत्तर वर्ष के बाद इसका मरण होता है।

गर्ग के अनुसार, अष्टम शुक्र हो तो जातक पिता का ऋण चुकाता है। तथा कुल की उन्नति करता है। इसकी मृत्यु किसी तीर्थ क्षेत्र में होती है। इसकी मृत्यु वात-कफ से या क्षुधा से होती है। यह शुक्र यदि स्थिर राशि में हो तो सतत् कष्ट होता है।

वृहद्यवनजातक के अनुसार, अष्टम भावगत शुक्र हो तो जातक देखने में सुन्दर, राजा द्वारा सम्मानित, निर्भय, गर्वीला, स्त्री तथा पुत्रों की चिंता से युक्त होता है।

भृगसूत्र के अनुसार, जातक सुखी, मध्यायु, रोगी, असंतुष्ट होता है। इसके चौथे वर्ष में माता पर संकट आता है। इसकी पत्नी इसका हित चाहने वाली होती है। शुभ ग्रह की राशि में, या युति में यह शुक्र हो तो जातक पूर्णायु होता है। यदि शुक्र पाप ग्रह के साथ हो तो अल्पायु होता है।

नवम भाव में:-

जिस जातक के जन्मांग के नवम भाव में शुक्र हो उसके नगर निवासी सभी मनुष्य इसे ब्याज (वृद्धि) देते हैं, कोई भी इसके ऋण से खाली नहीं रहता, अर्थात् यह अपने गाँव में विशेष धनाढ्य होता है। यह सूद पर रूपया देने का व्यवसाय करता है। सभी पुरवासी सूद पर कर्ज लेते हैं। इस तरह

इसके धन की उत्तरोत्तर वृद्धि होती रहती है। यह धार्मिक वृत्ति का होने के कारण सदावर्त, दान आदि धर्म के कार्य करता रहता है जिससे इसकी दूर-दूर तक प्रसिद्धि होती रहती है। लोग सदावर्त से भोजन खाते हैं-याचकों को कपड़े आदि वितरण होते हैं। इस कारण लोग इसके घर को शीघ्र ही पहचान लेते हैं। यह जातक धर्मध्वजी अर्थात् दम्भी होता है। यह अर्थ मनोरोचक नहीं है। संभव तो यह है कि इस जातक के घर के आगे धर्म नैमित्तिक कोई ध्वजा गाड़ी गई हो जिससे लोग इसके घर को शीघ्र ही पहचान लेते हों। दान का, धर्म का फल यश तो है ही लेकिन प्रसिद्धि भी आवश्यक ही है। इसे नौकरों से, दासों से और अपने बंधु लोगों से सुख मिलता है। इस सुख के अतिरिक्त शरीर का पूर्ण सुख होता है।

आचार्य वराहमिहिर के अनुसार, यदि नवम भाव में शुक्र हो तो जातक तपस्वी होता है अर्थात् जातक पवित्रात्मा होता है। पवित्रात्मा धनिक लोग ही यज्ञ, दान-इष्टापूर्त कर्मों से अपनी गाढ़ी कमाई खर्च करते हैं, यही लोग गरीबों के लिए लंगर लगाते हैं, गर्म कपड़े पहनने को देते हैं। नवम भाव का शुक्र अन्तःप्रेरणा से जातक की रूचि धार्मिक कार्यों की ओर खींचता है। यह मत **नारायणभट्ट जी** का है।

वैद्यनाथ के अनुसार, नवम भावस्थ शुक्र का जातक विद्या, धन, स्त्री, पुत्र आदि से संपन्न होता है।

गर्ग के अनुसार, यदि जातक के नवम भाव में शुक्र हो तो वह भाग्यवान्, धनप्रिय, बहुत गुणों से संपन्न, ब्राह्मणों का आदर करने वाला, अपने भुजबल से अपने उद्योग और परिश्रम से उन्नति करने वाला होता है।

वशिष्ठ के अनुसार, नवम भावगत शुक्र के जातक को अच्छे वस्त्रों की प्राप्ति होती है।

मंत्रेश्वर के अनुसार, यदि शुक्र नवम भाव में हो तो जातक स्त्री, पुत्र, मित्रों से युक्त एवं राजा से भाग्योदय प्राप्त करने वाला होता है।

मानसागर के अनुसार, नवम भाव में शुक्र हो तो जातक निर्मल शरीर, तीर्थ करने वाला, सुखी, देव-ब्राह्मण भक्त, पवित्र हृदय, अपने बाहुबल से उपार्जित धन को भोगने वाला होता है।

काशीनाथ के अनुसार, यदि शुक्र धर्म भाव अर्थात् नवम भाव में हो तो

जातक धार्मिक, ज्ञानी, सुखी, धनी, नृपति पूज्य, विजयी, लोकप्रिय होता है।

जयदेव के अनुसार, नवम भावगत शुक्र का जातक पाप कार्य छोड़कर कार्य करता है। सन्तोषी और क्रोध रहित होता है।

हरिवंश के अनुसार, यदि शुक्र नवम भाव में हो तो जातक राजा की कृपा से कुल की उन्नति करता है। यह सुखी, यशस्वी, धार्मिक कार्य करने वाला, विद्वान और धनवान् होता है। यह सदैव भाग्यवान् रहता है।

भृगुसूत्र के अनुसार, नवमस्थ शुक्र का जातक धार्मिक, तपस्वी तथा जपादि कार्य करने वाला होता है। इसके पाँव पर अच्छे सामुद्रिक लक्षण होते हैं। उपभोग मिलते हैं और भोग वृद्धि होती है। यह स्त्री-पुत्रों से युक्त होता है। इसका पिता दीर्घायु होता है। पाप ग्रह साथ हो तो पिता पर संकट आता है। पाप ग्रह के साथ उसकी राशि में, शत्रु ग्रह की राशि में या नीच में हो तो धन हानि होती है। गुरूपत्नी से व्यभिचार करता है। शुभ ग्रह साथ हो तो भाग्योदय होता है। अधिकार पद प्राप्त होता है। चतुर्थेश तथा सप्तमेश के साथ हो तो बहुत भाग्यवान होता है। घोड़े, पालकी आदि वाहन प्राप्त करता है। विचित्र कपड़े और आभूषणों का शौकीन होता है।

दशम भाव में:-

जिस मनुष्य के जन्म लग्न से दशमस्थान में शुक्र हो तो वंश के उत्पन्न करने वाले वीर्य को रोकता है अर्थात् संतान उत्पन्न करने योग्य उसका वीर्य नहीं होता है। अपने ही भ्रम से उसके कार्य बिगड़ जाते हैं। वह मनुष्य सर्वदा ब्राह्मण की वृत्ति से अर्थात् भिक्षावृत्ति से अपने साथ ढोंगी मनुष्य को रखकर लोगों से विवाद कर तुला परिमित सुवर्ण अर्थात् सौ पल माप का या चार सौ भरी माप का सोना कमाकर अपने प्राप्त कर लेता है।

जीवनाथ के अनुसार, जिस मनुष्य के जन्म समय में शुक्र दशम भाव में हो उसके कुल का नाश होता है। धन के त्याग अर्थात् खर्च से अनेक भ्रम उत्पन्न होते हैं। तात्पर्य यह है कि भ्रमवश पाँच के स्थान के दस देते रहने से सदा उसका धन नष्ट होता रहता है। अपने दरवाजे पर से ब्राह्मणों को अपमानित कर लौटाने से तथा शत्रुओं के साथ विवाद करने से एक सौ तोला सोना नष्ट होता है अर्थात् अत्यधिक धन नष्ट होता है।

वराहमिहिर के अनुसार, दशम भावस्थ शुक्र जातक को धनवान् बनाता है।

वैद्यनाथ के अनुसार, यदि जातक के कर्म स्थान में शुक्र हो तो इसे किसानों से स्त्रियों से, धन प्राप्त होता है। इस तरह दशमस्थ शुक्र का जातक विभु अर्थात् धनाढ्य होता है।

मंत्रेश्वर के अनुसार, जिसके दशम भाव में शुक्र हो वह जातक यशस्वी, मित्रों से युक्त, व्यवसाय में सफल तथा प्रभावशाली होता है।

जयदेव के अनुसार, कर्म भावगत शुक्र का जातक सज्जनों से युक्त, पत्नी पर प्रेम करने वाला धनवान्, शुद्ध हृदय रखने वाला तथा सद्विचारों वाला होता है।

काशीनाथ के अनुसार, जिस जातक के दशम स्थान में शुक्र हो तो वह कर्मण्य होता है, यह अफसर खज़ाना होता है, यह रत्नों से पूर्ण होता है, इसे राजा की नौकरी मिलती है। यह धर्म में श्रद्धालु होता है। उसे स्त्रियाँ प्रेम की दृष्टि से देखती हैं।

वृहदयवनजातक के अनुसार, जिस जातक के दशम भाव में शुक्र हो वह भाग्यवान्, आदरणीय तथा स्नान, ध्यान, पूजन आदि में मग्न रहता है। वह स्त्री-पुत्रों पर बहुत प्रेम करता है। इस तरह दशम भाव का शुक्र सुखदाता होता है।

भृगुसूत्र के अनुसार, जिसके दशम भाव में शुक्र होता है वह जातक बहुत प्रतापी होता है। यह शुभ कर्म करने वाला होता है। इसे संकल्पसिद्धि प्राप्त होती हैं अर्थात् इसके संकल्प पूर्ण होते हैं। इसे सभी प्रकार के वाहन घोड़ा, गाड़ी, हाथी, मोटर आदि प्राप्त होते हैं। इसके पास रत्न और चाँदी आदि बहुमूल्य वस्तुएं प्राप्त होती हैं। यदि दशम शुक्र के साथ कोई पाप ग्रह रहता है तो इसके कामों में विघ्न आते हैं। गुरू, चन्द्र और बुध साथ रहें तो बहुतेरे सवारी के वाहनों का सुख मिलता है। दशम भावगत शुक्र का जातक कई एक यज्ञ करता है। इसका यश सर्वत्र फैला रहता है। इसे राजदरबार में अधिकार पद प्राप्त होते हैं। यह जातक बहुत भाग्यशाली होता है। यह बहुत बोलने वाला और अच्छा वक्ता होता है। इसकी स्त्री धनी तथा सच्चरित्रा होती है।

कल्याणवर्मा के अनुसार, दशम भाव में शुक्र हो तो वह जातक अपने पौरुष से और विवाद से सुख, रीति, मान, धन और कीर्त्ति को प्राप्त करता

है। यह अपनी चतुर्मुखी बुद्धि से विख्यात होता है।

एकादश भाव में:-

जिस जातक के लग्न से एकादश भाव में शुक्र हो तो वह धन लाभ करता है। वह जातक गुणवान्, अच्छे स्वभाव का, देदीप्यवान् कीर्त्तियुक्त, सत्य भाषण करने वाला, सर्वविधि भोग भोगने वाला, ऐश्वर्यवान्, प्रभुत्त्व सामर्थ्यवान्, राजा के समान सामर्थ्ययुक्त, एक प्रकार से राजा ही होता है। यदि शुक्र अधिक बली हो तो ऊपर बतलाए हुए फलों में से अधिक फलदाता होता है, यदि मध्यबली हो तो फल भी मध्यम दर्जे का मिलता है और यदि शुक्र हीनबली हो तो हीन फल प्राप्ति होगी। इस तरह बलतारतम्य से फल का आदेश करना होगा। राजा शब्द किसी प्रधान व्यक्ति का द्योतक हो सकता है। राजा शब्द से उस व्यक्ति का भी बोध हो सकता है जो निग्रह-अनुग्रह सामर्थ्ययुक्त हो अर्थात् प्रधान अधिकारी हो। प्राचीन भारत के राजे-महाराजे आजकल के भारत में कानूनन प्रचलित नहीं रहे हैं। किसी एक टीकाकार ने लाभ भावस्थित शुक्र का फल उदारता, राजमान्यता तथा कन्याभूयस्व बतलाया है।

वैद्यनाथ के अनुसार, यदि किसी जातक के एकादश भाव में शुक्र होता है तो जातक सुखी पर-स्त्रीरतिलोलुप, प्रवासी और धनवान् होता है।

वराहमिहिर के अनुसार, जिस जातक के एकादश भाव में शुक्र होता है तो जातक सुख एवं लाभ पाता है।

वशिष्ठ के अनुसार, एकादशस्थ शुक्र होने से जातक गुणवान् और धनी होता है।

गर्ग के अनुसार, यदि लाभ भावगत शुक्र हो तो जातक रत्नरूप उत्तम स्त्री तथा रत्नों से युक्त होता है। इसका शरीर निरोग होता है। इसे किसी प्रकार का शोक नहीं होता है। यह धन संपन्न तथा नौकरों से युक्त होता है।

मंत्रेश्वर के अनुसार, शुक्र के एकादश भाव में स्थित होने से जातक धनी, सुखी और परस्त्री में आसक्त होता है।

जयदेव के अनुसार, यदि शुक्र लाभ भाव में हो तो जातक धनी, बुद्धिमान तथा नृत्यगीत का विशेषज्ञ होता है।

काशीनाथ के अनुसार, यदि शुक्र लाभ भावस्थ हो तो जातक नरश्रेष्ठ

यशस्वी, गुणी, धनी, भोगी, सदा लाभयुक्त और सदाचारी होता है।

मानसागर के अनुसार, लाभ भावगत शुक्र के होने पर जातक उत्तम गुणों से युक्त, अग्निपूजक-अग्निहोत्री कामदेव के समान सुन्दर तथा कमनीय शरीर वाला होता है।

वृहद्यवनजातक के अनुसार, यदि भृगुपुत्र शुक्र लाभ भाव में हो तो जातक की रूचि गायन, विद्या, नृत्य आदि कलाओं में होती है। प्रतिदिन धनागम होता रहता है, अर्थात् जातक की धनवृद्धि प्रतिदिन दिनदूनी रात चौगुनी होती रहती है इसकी चित्तवृत्ति सदा शुभकर्मो की ओर लगी रहती है। इसका आचरण गाष्श्रानुकूल तथा धार्मिक होता है।

भृगुसूत्र के अनुसार, यदि किसी जातक के एकादश भाव में शुक्र हो तो वह विद्वान, बहुत धनवान, भूमि लाभवान् तथा दयावान् होता है। शुभ ग्रहों के साथ संबंध हो तो शरीर बहुत कान्तिमान् होता है। इसे बहुत प्रकार के वाहन, घोड़ा, हाथी, गाड़ी, स्कूटर, मोटर आदि और बहुत सोना प्राप्त होता है। यदि यह शुक्र पाप ग्रहों से युक्त हो तो बुरे कामों से धन का लाभ होता है और यदि शुभ ग्रहों से युक्त हो तो अच्छे कामों से धनलाभ होता है नीच राशि में पाप ग्रह के साथ या अष्टमेश से युक्त हो तो लाभ नहीं होता है।

द्वादश भाव में:-

जिस जातक के जन्म लग्न से बारहवें स्थान में शुक्र हो तो उसे कभी धन प्राप्त हो जाता है। उसका पित्त शान्त हो जाता है अर्थात् जातक के शरीर में पित्त की अपेक्षा कफ अधिक मात्रा में रहता है। यह जातक क्रीड़ा और शुभकर्म से सुखी रहता है। यह जातक अपने धन को शुभ कर्मों में खर्च करके सद्व्ययजन्य सुख प्राप्त करता है। इस जातक का गुण और यश नष्ट हो जाता है। यह अपने मित्रों से तथा लोगों से भी वैर करता है।

जीवनाथ के अनुसार, जिस जातक के जन्म समय में शुक्र द्वादश भाव में हो तो उसे कदाचित् धन का लाभ होता है, किंतु खर्च प्रतिदिन होता है। सदा कामक्रीड़ा (रतिविलास) होती है। जातक श्रेष्ठकर्मों को करता है। गुणों की अल्पता होती है और सहसा मित्रों से विरोध होता है।

वराहमिहिर के अनुसार, यदि जातक के द्वादश भाव में शुक्र हो तो जातक

क्रूरचेष्ट होता है।

वैद्यनाथ के अनुसार, यदि जातक के द्वादश भाव में शुक्र हो तो वह बन्धुनाशक, व्यभिचारबुद्धि और निर्धन होता है।

जयदेव के अनुसार, यदि जातक का शुक्र द्वादश में हो तो वह दुष्कर्म करनेवाला अर्थात् दुराचारी, कामुक, कलहप्रिय अर्थात् झगड़ालू तथा धनवान् होता है।

वशिष्ठ के अनुसार, द्वादश शुक्र हो तो खर्च बहुत होता है और रोग होते हैं।

गर्ग के अनुसार, जिस जातक के द्वादश भाव में शुक्र हो तो वह श्रद्धाहीन-दयाहीन, परस्त्रीगामी, रोगी तथा स्थूल शरीर होता है।

मंत्रेश्वर के अनुसार, द्वादश भाव का शुक्र हो तो जातक को रतिसुख अर्थात् स्त्री के साथ संयोग होने का सुख प्राप्त होता है। जातक वैभवयुक्त तथा तेजस्वी होता है।

कल्याणवर्मा के अनुसार, द्वादश भाव का शुक्र होने से जातक आलसी, सुखी, स्थूल शरीर, आचारहीन, दुराचारी, शोधित अन्न खाने वाला, कामक्रीड़ा में निपुण तथा स्त्री के अधीन रहने वाला होता है।

मानसागर के अनुसार, द्वादश भावस्थ शुक्र का जातक बचपन में रोगी, पीछे निरोग होकर कपटी, दुर्बल, मलिन और सदा कृपण होता है।

वृहद्यवनजातक के अनुसार, जिस जातक के जन्म समय शुक्र द्वादश भाव में हो तो वह अच्छे काम बिल्कुल नहीं करता। यह कामुक, निर्दय तथा झूठ बोलने वाला होता है।

जागेश्वर के अनुसार, द्वादश भावस्थ शुक्र का जातक झूठा, निर्दय, स्थूलकाय, संसारी, कामुक, पापी और दुराचारी होता है।

भृगुसूत्र के अनुसार, द्वादश भावगत शुक्र प्रभावान्वित जातक बहुत दरिद्र होता है। पाप ग्रह के साथ हो तो विषयी होता है। इसे मृत्यु के बाद नरक प्राप्त होता है। शुभग्रह के साथ हो तो धनवान्, शय्या आदि के सुख से युक्त होता है तथा मृत्यु के अनन्तर अच्छी गति प्राप्त करता है।

*****